नाम :– डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम :– दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय :– कला

पद का नाम :– सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय :– सूरदास का वात्सल्य वर्णन

दिनांक :– 04/07/2025

डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

सूरदास का वात्सल्य वर्णन

शोध सारः–

हिन्दी साहित्य में वात्सल्य रस का सजीव, सरस और आकर्षक वर्णन करने वाला भारत हीं नही, सम्पूर्ण विश्व में कोई प्रख्यात कवि हुआ है तो वह 'सूरदास' हीं है। सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित सीही नामक गाँव में सन् 1478 ई0 में हुआ था। सूरदास हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के सगुण धारा के कृष्ण–भक्ति उपशाखा के महान् कवि हैं। उनका वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की उनुपम निधि है। श्री कृष्ण के बाल–सौंदर्य के साथ–साथ बाल मनोविज्ञान का जैसा चित्रण सूर काव्य में उपलब्ध होता है वैसा अन्यत्र कहीं नही मिलता। शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक न जाने कितने चित्र उनके काव्य में प्रस्तुत किए गए है। उनमें केवल बाहरी रूपों और चेष्टाओं का ही विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन नहीं है, कवि ने बालको की अन्तः प्रकृति का भी वर्णन किया है और अनेक भावों की सुन्दर स्वभाविक व्यंजना की हैं। पुरूष होते हुए भी सूरदास के पास माँ का कोमल हृदय था। संसारिक संबधो से दूर रहते हुए भी सूर ने वात्सल्य का इतना मार्मिक चित्रण किया है कि उसे अनुभवगम्य मानना पड़ता है। सूरदास ने अपने काव्य में श्री कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं को मातृ हृदय से निहार कर जैसा मार्मिक, सजीव, मनोमुग्धकारी चित्रण किया है, वैसा वर्णन हिन्दी साहित्य में मिलना असंभव है। अपने मानवीय तथा लौकिक संदर्भो में ही ये लीलाएँ सूर के काव्य की स्थाई निधि हैं और इनकी इस मानवीय तथा लौकिक आकृति के सन्दर्भ में उनके अन्तर्गत निहित तथा व्यंजित सूर काव्य की विशिष्ठता को उभारा जा सकता है। बालक कृष्ण का सरल स्वभाव सूर के हृदय को मातृहृदय की ओर आन्दोलित करता है। उनके मन में यशोदा की तरह ही सरलता, वात्सलता और आनंद की कोमल अनुभूतियों का बहाव होता है। यह सब कवि की जीवन के प्रति आस्था का प्रमाण है।

मुख्य शब्दः– वात्सल्य, अनुभवगम्य, मनोमुग्धकारी, निष्कपट, मर्मस्पर्शी, हृदयग्राही, मातृहृदय, मनोरम आदि।

प्रस्तावनाः–

जीवन का आधार प्रेम को माना जा सकता है। यह प्रेम पशु, पक्षी, मनुष्य आदि सभी प्राणियों में पाया जाता है। इस प्रेम के अनेक स्वरूप है, जैसे समवयस्कों में मैत्री या सखा भाव के रूप में, पति–पत्नी के बीच दाम्पत्य भाव के रूप में, गुरूजनों एवं महापुरूषों के प्रति श्रद्धा भाव के रूप में, पुत्र–पुत्री, अनुज–अनुजा एवं अपनों से उम्र में छोटे व्यक्ति के प्रति वात्सल्य भाव के रूप में दिखाई देता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वात्सल्य भावना प्रेम का वह स्वरूप है, जिसमें किसी उम्र में छोटे व्यक्ति या शिशु के प्रति निश्छल एवं निष्कपट प्रेम की भावना रहती है। जिसको देखकर हमारा हृदय रूपी समुद्र प्रेम रूपी तरंगो से आह्लादित हो उठता है। प्रेम की निर्मल एवं पवित्र स्थिति वात्सल्य ही है। जिसके अन्तर्गत सहज–सुकुमार बालक की चेष्टाओं, क्रीड़ाओं एवं उट–पटांग कार्यो की प्रधानता होती है। सूरदास ने अपने काव्य में इस वात्सल्य भाव का वर्णन अत्यंत मार्मिक एवं सजीव रूप में किया है। सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। 'भागवत' पुराण के दशम स्कंद के अधार पर उन्हो ने राधा–कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन सूरसागर मे किया है। उन्होंने श्रीकृष्ण की भिन्न–भिन्न प्रकार की लीलाओं का वर्णन किया है। सूर की दृष्टि कृष्ण के लोकरंजक रूप पर हीं अधिक रही है। लीला वर्णन में भी सूर ने भाव चरित्र पर अधिक जोर दिया है। भाव चरित्र में वात्सल्य को ही सबसे अधिक दिखाया गया है। उन्होंने वात्सल्य के दोनो पक्षों का मार्मिक वर्णन किया हैः– संयोग वात्सल्य व वियोग वात्सल्य।

वात्सल्य का संयोग पक्षः–

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य का अक्षय निधि है। सूरदास के काव्य में कृष्ण के बाल सौन्दर्य के साथ–साथ जैसा बाल मनोविज्ञान का वर्णन मिलता है, वैसा कहीं उन्यत्र दुर्लभ है। सूर ने बाल वृत्तियों का निरूपण, बालक की चेष्टाएँ, माँ की पुत्र के प्रति वात्सल्य आदि का मर्मस्पर्शी एवं मनोहारी चित्रण अपने काव्य में किया है। बालक कृष्ण की लीलाओं का उन्होंने ऐसा कलापूर्ण चित्रण किया है कि उसे पढ़कर सहृदय पाठक झूम उठता है। सूरसागर में लगभग सात सौ पद इसी संदर्भ में रचे गए हैं। सूर ने बालकों की सहज मनोवृत्तियों के स्वभाविक चित्र अंकित करते हुए वात्सल्य के संयोग पक्ष का बड़ा हीं मार्मिक एवं मनोहारी वर्णन किया है। सूरदास ने बालक कृष्ण के रूप माधुरी की दिव्य एवं अलौकिक चित्रों द्वारा बड़ी हीं सजीवता के साथ वर्णन किया है। बालक कृष्ण की वेशभूषा बड़ी सहज, स्वभाविक एवं चित्ताकर्षक हैः–

"हरिजू की बाल–छवि कहौ बरनि।
सकल सुख की सींव कोटी मनोज सोभा हरनि।
सोभा कहत नहीं आवै।
अंचवत अति आतुर लोचन–पुट मन न तृप्ति को पावै।।"

सूरदास ने श्री कृष्ण की बाल–सुलभ चेष्टाओं एवं विविध क्रीड़ाओं के अत्यंत स्वभाविक एवं मनोमुग्धकारी चित्र अंकित किए है, जिनमें कहीं कृष्ण घुटनों के बल आँगन में चल रहे हैं, कहीं मुख पर दधि लेप कर दौड़ रहे है। कहीं अपने प्रतिबिम्ब को मणि–खंभों में निहार रहें हैं। कहीं अपने पैर का अंगुठा चुस रहें हैं तो कहीं हँसते हुए किलकारी भर रहे हैं। बालक कृष्ण माता यशोदा का हाथ पकड़कर डगमगाते हुए पैर आगे बढ़ाते हैं।

"सिखवत चलन जसोदा मैया।
अरबराई कर पानी गहावत, डगमगाई धरनी धरै पैया।"

बाल कृष्ण धूल में लिपटे हुए घुटनों के बल चलते हुए मीठी–मीठी बोली बोल रहे है। माता यशोदा इस छवि को देखकर आह्लादित हो रही हैं–

"हौं बलि जाऊँ छवि छबीले लाल की।
धूसर धूरी घुटरूबन रेंगनि बोलन बचन रसाल की।"

कृष्ण मुख पर दधि का लेप किए हुए दौड़ रहे हैं और अपनी हीं परछाई को पकड़ने की चेष्टा कर रहें है, तो कहीं किलकारी भर रहें हैं। इसका मनोरम चित्रण करते हुए सूरदास कहते हैः–

"सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरूनि चलत रेनु–तन मंडित मुख दधि लेप किए।"

बालक कृष्ण की किलकारी भरी हँसी एवं मणि–जटित आँगन में अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने के लिए दौड़ते समय के चित्र का वर्णन सूरदास ने बड़ा हीं हृदयग्राही तरीके से किया है–

"किलकत कान्ह छुटरूवनी धावत।
मनिमय कनक नंद के आँगन बिंब पकरिबे धावत।।"

सूरदास ने बालकों के हृदयस्थ मनोभावों का चित्रण बड़े हीं मनोरम ढ़ँग से किया है। उनके काव्य में बच्चों के खींझ, पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा, बुद्धि की चतुराई, अपराध को छिपाने की प्रवृति, भोले–भाले तर्क आदि का विस्तृत चित्रण देखनें को मिलता है। बालक कृष्ण दूध नहीं पी रहें है, माता यशोदा लालच देती हुई कृष्ण को दूध पिलाने का प्रयत्न कर रहीं हैं कि दूध पीने से तुम्हारी चोटी बढ़ जाएगी, इसपर कृष्ण एक हाथ से अपनी चोटी पकड़कर दूसरे हाथ से दुध पीते हुए पुछ रहे हैं मैंया कब बढ़ेगी चोटी? इस भाव का सजीव चित्रण सूरदास ने इस प्रकार करते हैं–

"मैंया कबहिं बढ़ेगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पिवत भई, यह अजहूँ है छोटी
तू जो कहती बल की बैनी ज्यों, हबे लाँबी मोटी।
काँचो दूध पिवावत पचि–पचि देत न माखन रोटी।"

कृष्ण माखन चोरी करते हुए रंगे हाथ पकड़े गए हैं। मुख पर माखन लगा हुआ है फिर भी माता यशोदा के सम्मुख मधुर सफाई देते हुए बालक कृष्ण कहते है कि मैं माखन नहीं खाया हूँ–

"मैया मैं नहीं माखन खायो।
ख्याल परै ये सखा सबै मिली मेरे मुख लपटायौ।।
देखी तु ही सीकें पै भाजन ऊँचे धरि लटकायौ।
तुही निरख नान्हे कर अपने में कैसे करि पायो।।"

सूरदास ने बाल–सुलभ आक्रोश का वर्णन भी सुन्दर ढ़ँग से किया है। बलराम कृष्ण को चिढ़ाते हैं कि तू यशोदा मैया का पुत्र नहीं है तुझे तौ मैंया ने मोल लिया है। इसपर कृष्ण खींझ जाते हैं और यशोदा के सामने अपने बाल सुलभ आक्रोश इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं–

''मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मो सो कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब जायो।।
कहा कहौं एहि रिस के मारे, खेलन हौं नहीं जातु।।
पुनी–पुनी कहत कौन है माता, को है तुम्हारे तातु।।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम शरीर
चुटकी दै हँसते ग्वाल सब, सिखै देत बलवीर।।

वात्सलय का वियोग पक्षः–

जितनी तन्मयता से सूरदास ने वात्सलय के संयोग पक्ष का वर्णन अपने काव्य में किया है ठीक उसी प्रकार वात्सल्य के वियोग पक्ष का भी अत्यन्त मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। वियोग वात्सल्य की सबसे सुन्दर झलक सुरदास ने कृष्ण के मथुरा गमन पर प्रस्तुत की है। कृष्ण के मथुरा प्रस्थान करते समय माता यशोदा कितनी विकल है। इसका वर्णन करते हुए सूरदास लिखते हैं–

''है कोई ब्रज में हितु हमारो, चलत गोपालहि राखै।
कहा करे मेरे छगन मगन को, नृप मधुपरी बुलायौ।
सुफलक सुत मेरे प्राण हनन को काल रूप होई आयौ।।''

कृष्ण के मथुरा चले जाने से माता यशोदा को अनंत दुःख हुआ । यशोदा को यही आशा थी की कृष्ण अपने बाबा नन्द के साथ मथुरा भ्रमण के लिए गए हैं और कुछ हीं दिनों में वापस आ जाएंगे लेकिन जब यशोदा ने नन्द को अकेले आते देखा तो उनके दुःख और निराशा की कोई सीमा हीं नहीं रही और कृष्ण के वियोग में सहज टीस, आकुलता एवं व्यथा से परिपूर्ण होकर अपने पति नन्द को फटकारती है। इसका वर्णन सूरदास ने इसप्रकार किया है–

जसुदा कान्ह के बूझै।
फूटी न गई तुम्हारी चारों कैसे मारग सूझै।।
छाड़ि स्नेह चले मथुरा, कत दौरिन चीर गहयौ।
फाटि न गई ब्रज की छाती, कत यह सूल सहयौ।।

माता यशोदा यह भली प्रकार जानती है कि मथुरा में श्रीकृष्ण के देखभाल करने वाले वासुदेव व देवकी हैं फिर भी अमंगल की आशंका उसे घेरे रहती है वह कृष्ण के प्रति हर पल चिंतित रहती है और पथिक के हाथों संदेश भेजती है–

संदेशो देवकी से कहियौं।
हौं तो धाय तुम्हारे सुत की, दया करत ही रहियौ।
प्रातः होत मेरे लाल लड़ैते, माखन रोटी भावे।
जोई माँगत सोई देती, क्रम करि कै हाते।
सूर पथिक सुनी मोहि रैन–दिन बढ़यो रहत उर सोच।।

निष्कर्षः–

इस प्रकार वात्सल्य का बड़ा हीं सुन्दर वर्णन सूर ने किया है जिसमें बाल चेष्टाओं व क्रीड़ाओं के अतिरिक्त मातृ हृदय की भावुकता की मनोरम अभिव्यक्ति हुई है। सूरदास की वात्सल्य भावना

बहुत हीं मनोरम, मार्मिक, स्वाभाविक, वास्तविक एवं हृदयस्पर्शी है। सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता, सहजता एवं मनोवैज्ञानिकता है। इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैंः–

''आगे होने वाले कवियों के श्रृंगार और वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठी सी जान पड़ती है। ''वास्तव में सूरदास बाल–प्रकृति एवं बाल मनोवृत्तियों के कुशल चितेरे हैं। निश्चय हीं सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट कहा जा सकता है, क्योंकि उन्होंने अपने काव्य में बाल–प्रकृति एवं बाल मनोवृत्तियों का सहज चित्रण किया है।

♦ ♦ ♦